|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| 28. Dezember | | |
| **Fest Unschuldige Kinder** | | |
| Lesung.: 1 Joh 1,5-2,2; Evangelium: Mt 2,13-18 | | |
|  |  |  |
| Eröffnung: | GL 252, 1-4 | Gelobet seist du, Jesu Christ |
|  | GL 734 | Singt, Völker |
|  |  |  |
| Kyrie: |  | entfällt bei GL 252 |
|  | GL 159 | Licht, das uns erschien |
|  |  |  |
| Gloria: | GL 250, 1+3 | Engel auf den Feldern singen |
|  | GL 727 | Wir singen mit dem Engelheer |
|  |  |  |
| Antwortgesang: | Psalm 124, 2-5.7-8 | |
|  | Kehrvers: |  |
|  | GL 636, 1 | Das Licht leuchtet |
|  | oder |  |
|  | GL 239, 3-5 | O Kinderlein, von Herzen |
|  |  |  |
|  |  | |
| Halleluja-Ruf: | GL 244 |  |
|  | Vers: |  |
|  | *Dich, Gott, loben wir, dich, Herr, preisen wir;* | |
|  | *dich lobt der glorreiche Chor der Apostel.* | |
|  |  | |
| Gabenbereitung: | GL 728, 2 | Göttliches Kind |
|  | GL 254, 1-4 | Du Kind, zu dieser heilgen Zeit |
|  |  |  |
| Sanctus: | GL 200 | Heilig |
|  |  |  |
| Agnus Dei: | GL 256, 1+4 | Ich steh an deiner Krippe hier |
|  |  |  |
| Danksagung: | GL 737 | Du Weltenheiland |
|  |  |  |
| Schluss: | GL 253 | In dulci jubilo |